रविवार 15 दिसंबर, 2019

विषय — भगवान मनुष्य के संरक्षक हैं

स्वर्ण पाठ: मत्ती 5 : 8

"*धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।*"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 24 : 1-6**

1 पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है; जगत और उस में निवास करने वाले भी।
2 क्योंकि उसी ने उसकी नींव समुद्रों के ऊपर दृढ़ करके रखी, और महानदों के ऊपर स्थिर किया है॥
3 यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा हो सकता है?
4 जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है, जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया, और न कपट से शपथ खाई है।
5 वह यहोवा की ओर से आशीष पाएगा, और अपने उद्धार करने वाले परमेश्वर की ओर से धर्मी ठहरेगा।
6 ऐसे ही लोग उसके खोजी हैं, वे तेरे दर्शन के खोजी याकूब वंशी हैं॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. 2 तीमुथियुस 4: 18 (यह) (*से.*)

18 ...प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य में उद्धार कर के पहुंचाएगा: उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन॥

2. भजन संहिता 86 : 2

2 मेरे प्राण की रक्षा कर, क्योंकि मैं भक्त हूं; तू मेरा परमेश्वर है, इसलिये अपने दास का, जिसका भरोसा तुझ पर है, उद्धार कर।

3. 1 पतरस 3 : 11-14

11 वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूंढ़े, और उस के यत्न में रहे।
12 क्योंकि प्रभु की आंखे धमिर्यों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उन की बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है॥
13 और यदि तुम भलाई करने में उत्तेजित रहो तो तुम्हारी बुराई करने वाला फिर कौन है?
14 और यदि तुम धर्म के कारण दुख भी उठाओ, तो धन्य हो; पर उन के डराने से मत डरो, और न घबराओ।

4. भजन संहिता 5 : 12

12 क्योंकि तू धर्मी को आशिष देगा; हे यहोवा, तू उसको अपने अनुग्रहरूपी ढाल से घेरे रहेगा॥

5. उत्पत्ति 6 : 1 (*से 2nd* ,), 5 (God), 8, 9 (Noah was), 13 (*से 1st* ,), 14, 17-19, 22

1 फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत बढ़ने लगे, और उनके बेटियां उत्पन्न हुई,
5 और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है।
8 परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही॥
9 नूह की वंशावली यह है। नूह धर्मी पुरूष और अपने समय के लोगों में खरा था, और नूह परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा।
13 तब परमेश्वर ने नूह से कहा।
14 इसलिये तू गोपेर वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज बना ले, उस में कोठरियां बनाना, और भीतर बाहर उस पर राल लगाना।
17 और सुन, मैं आप पृथ्वी पर जलप्रलय करके सब प्राणियों को, जिन में जीवन की आत्मा है, आकाश के नीचे से नाश करने पर हूं: और सब जो पृथ्वी पर हैं मर जाएंगे।
18 परन्तु तेरे संग मैं वाचा बान्धता हूं: इसलिये तू अपने पुत्रों, स्त्री, और बहुओं समेत जहाज में प्रवेश करना।
19 और सब जीवित प्राणियों में से, तू एक एक जाति के दो दो, अर्थात एक नर और एक मादा जहाज में ले जा कर, अपने साथ जीवित रखना।
22 परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया।

6. उत्पत्ति 7 : 1, 7, 17, 23

1 और यहोवा ने नूह से कहा, तू अपने सारे घराने समेत जहाज में जा; क्योंकि मैं ने इस समय के लोगों में से केवल तुझी को अपनी दृष्टि में धर्मी देखा है।
7 नूह अपने पुत्रों, पत्नी और बहुओं समेत, जलप्रलय से बचने के लिये जहाज में गया।
17 और पृथ्वी पर चालीस दिन तक प्रलय होता रहा; और पानी बहुत बढ़ता ही गया जिस से जहाज ऊपर को उठने लगा, और वह पृथ्वी पर से ऊंचा उठ गया।
23 और क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगने वाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, जो जो भूमि पर थे, सो सब पृथ्वी पर से मिट गए; केवल नूह, और जितने उसके संग जहाज में थे, वे ही बच गए।

7. उत्पत्ति 8 : 14-17 (*से 1st* ,)

14 और दूसरे महीने के सताईसवें दिन को पृथ्वी पूरी रीति से सूख गई॥
15 तब परमेश्वर ने, नूह से कहा,
16 तू अपने पुत्रों, पत्नी, और बहुओं समेत जहाज में से निकल आ।
17 जितने शरीरधारी जीवजन्तु तेरे संग हैं, उस सब को अपने साथ निकाल ले आ।

8. उत्पत्ति 9 : 1, 8, 11 (मैं), 12

1 फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी और उन से कहा कि फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ।
8 फिर परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा,
11 और मैं तुम्हारे साथ अपनी इस वाचा को पूरा करूंगा; कि सब प्राणी फिर जलप्रलय से नाश न होंगे: और पृथ्वी के नाश करने के लिये फिर जलप्रलय न होगा।
12 फिर परमेश्वर ने कहा, जो वाचा मैं तुम्हारे साथ, और जितने जीवित प्राणी तुम्हारे संग हैं उन सब के साथ भी युग युग की पीढ़ियों के लिये बान्धता हूं; उसका यह चिन्ह है:

9. इब्रानियों 11 : 1-3, 6, 7

1 अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।
2 क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई।
3 विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।
6 और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।

7 विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिये जहाज बनाया, और उसके द्वारा उस ने संसार को दोषी ठहराया; और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है।

10. 2 तीमुथियुस 2 : 19 (यह)-21

19 ...परमेश्वर की पड़ी नेव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है, कि प्रभु अपनों को पहिचानता है; और जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे।
20 बड़े घर में न केवल सोने-चान्दी ही के, पर काठ और मिट्टी के बरतन भी होते हैं; कोई कोई आदर, और कोई कोई अनादर के लिये।
21 यदि कोई अपने आप को इन से शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा।

11. अय्यूब 22 : 21, 30

21 उस से मेलमिलाप कर तब तुझे शान्ति मिलेगी; और इस से तेरी भलाई होगी।
30 वरन जो निर्दोष न हो उसको भी वह बचाता है; तेरे शुद्ध कामों के कारण तू छुड़ाया जाएगा।

12. अय्यूब 11 : 18

18 और तुझे आशा होगी, इस कारण तू निर्भय रहेगा; और अपने चारों ओर देख देखकर तू निर्भय विश्राम कर सकेगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 232 : 7-8

सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत होने के दावों के लिए सुरक्षा केवल दिव्य विज्ञान में पाई जाती है।

2. 203 : 3-6

ईसाई धर्म के विज्ञान में, मन - सर्व-शक्ति - में सर्व-शक्ति है, धार्मिकता के लिए निश्चित पुरस्कार प्रदान करता है, और यह दर्शाता है कि यह मामला न तो ठीक कर सकता है और न ही बीमार कर सकता है, बना सकता है और न ही नष्ट कर सकता है।

3. 254 : 10-12

जब हम धैर्यपूर्वक ईश्वर की प्रतीक्षा करते हैं और सत्य की तलाश करते हैं, तो वह हमारे मार्ग का निर्देशन करता है।

4. 183 : 21-25

डिवाइन माइंड सही ढंग से मनुष्य की संपूर्ण आज्ञाकारिता, स्नेह और शक्ति की माँग करता है। किसी भी कम निष्ठा के लिए कोई आरक्षण नहीं किया जाता है। सत्य का पालन मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य देता है। त्रुटि के अधीन होने से शक्ति का नुकसान होता है।

5. 19 : 26-28

यदि उसके प्रति अवज्ञा में रहते हैं, तो हमें कोई सुरक्षा महसूस नहीं करनी चाहिए, हालांकि भगवान अच्छा है।

6. 91 : 5-8

आइए हम खुद को इस विश्वास से मुक्त करें कि मनुष्य ईश्वर से अलग हो जाता है, और केवल ईश्वरीय सिद्धांत, जीवन और प्रेम का पालन करता है। यहाँ सभी सच्चे आध्यात्मिक विकास के लिए प्रस्थान का महान बिंदु है।

7. 241 : 23-30

एक उद्देश्य, विश्वास से परे एक बिंदु, सत्य के नक्शेकदम पर चलना चाहिए, स्वास्थ्य और पवित्रता का रास्ता। हमें होरेब की ऊँचाई तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए जहाँ परमेश्वर प्रगट होता है; और सभी आध्यात्मिक भवन की आधारशिला पवित्रता है। आत्मा का बपतिस्मा, मांस की सभी अशुद्धियों के शरीर को धोना, यह दर्शाता है कि शुद्ध हृदय ईश्वर को देखता है और आध्यात्मिक जीवन और उसके प्रदर्शन के करीब पहुंच रहा है।

8. 337 : 14 (ईसाई)-19

क्रिश्चियन साइंस यह प्रदर्शित करता है कि कोई भी नहीं बल्कि हृदय में शुद्ध परमेश्वर को देख सकता है, जैसा कि सुसमाचार सिखाता है। उसकी शुद्धता के अनुपात में मनुष्य परिपूर्ण है; और पूर्णता आकाशीय होने का क्रम है जो जीवन को मसीह में प्रदर्शित करता है, जीवन का आध्यात्मिक आदर्श है।

9. 272 : 19-27

यह भौतिक जीवन के भयावह रूप से परिणाम के विपरीत, दैनिक जीवन के विचार और ईसाईकरण का आध्यात्मिकीकरण है; यह शुद्धता और पवित्रता, कामुकता और अशुद्धता के नीचे की ओर झुकाव और सांसारिक

गुरुत्वाकर्षण के विपरीत है, जो वास्तव में क्राइस्टियन साइंस के दिव्य उत्पत्ति और संचालन को प्रमाणित करता है। क्राइस्टियन साइंस की जीत त्रुटि और बुराई के विनाश में दर्ज की जाती है, जिसमें से पाप, बीमारी और मृत्यु की निराशाजनक मान्यताओं का प्रचार किया जाता है।

10. 91 : 9-15

पापी के लिए ईश्वरीय विज्ञान को स्वीकार करना कठिन है, क्योंकि विज्ञान उसकी शून्यता को उजागर करता है; लेकिन जितनी जल्दी यह त्रुटि अपने मूल शून्य में कम हो जाती है, उतनी ही जल्दी आदमी की महान वास्तविकता दिखाई देगी और उसके वास्तविक अस्तित्व को समझा जाएगा। सत्य या जीवन को नष्ट करने के लिए त्रुटि का विनाश किसी भी तरह से नहीं है, लेकिन उनकी स्वीकार्यता है।

11. 540 : 5-16

यशायाह में हम पढ़ते हैं: "मैं उजियाले का बनाने वाला और अन्धियारे का सृजनहार हूं, मैं यहोवा ही इन सभों का कर्त्ता हूं;" लेकिन भविष्यद्वक्ता ने ईश्वरीय कानून का उल्लेख करते हुए बुराई के प्रति विश्वास को अत्यंत बढ़ा दिया, जब उसे सतह पर लाया और उसके सामान्य भाजक, शून्य को कम किया। धारा को शुद्ध करने के लिए मैला नदी-बिस्तर को हिलाया जाना चाहिए। नैतिक रासायनिककरण में, जब बुराई, भ्रम के लक्षण बढ़ जाते हैं, तो हम अपनी अज्ञानता में सोच सकते हैं कि भगवान ने बुराई को मिटा दिया है; लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि ईश्वर का कानून तथाकथित पाप और उसके प्रभावों को उजागर करता है, केवल यह कि सत्य बुराई की सभी भावना और पाप करने की शक्ति को नष्ट कर सकता है।

12. 581 : 8-14

नाव। सुरक्षा; सत्य के विचार, या प्रतिबिंब, अपने सिद्धांत के रूप में अमर साबित हुए; आत्मा की समझ, मामले में विश्वास को नष्ट करना।

ईश्वर और मनुष्य सह-अस्तित्व और शाश्वत; विज्ञान दिखा रहा है कि सभी चीज़ों की आध्यात्मिक वास्तविकता उसके द्वारा बनाई गई है और हमेशा के लिए मौजूद है। सन्दूक प्रलोभन से उबरने और पीछा करने का संकेत देता है।

13. 407 : 6-16

सबसे अथक स्वामी के लिए मनुष्य की दासता - जुनून, स्वार्थ, ईर्ष्या, घृणा और बदला - केवल एक शक्तिशाली संघर्ष द्वारा विजय प्राप्त की जाती है। हर घंटे की देरी संघर्ष को और गंभीर बना देती है। यदि मनुष्य जुनून पर विजयी नहीं होता है, तो वे खुशी, स्वास्थ्य, और मर्दानगी को कुचल देते हैं। यहाँ क्राइस्टियन साइंस, प्रभु की रामबाण औषधि है, जो नश्वर मन की कमजोरी को ताकत देती है, - अमर और सर्वशक्तिमान दिमाग

से ताकत, - और आध्यात्मिकता और खुद को मनुष्य से ऊपर उठाकर मानवता को शुद्ध इच्छाओं में, और यहां तक कि मनुष्य के लिए भी।

14. 201 : 7 (सत्य)-12

सत्य एक नया प्राणी बनाता है, जिसमें पुरानी चीजें गुजर जाती हैं और "सभी चीजें नई हो जाती हैं।" जुनून, स्वार्थ, झूठी भूख, घृणा, भय, सभी कामुकता, आध्यात्मिकता के लिए उपज, और होने का अतिरेक ईश्वर की तरफ है। , अच्छा।

15. 458 : 23-31

ईसाई वैज्ञानिक वैज्ञानिक ईश्वरीय कानून को दर्शाता है, इस प्रकार यह स्वयं के लिए एक कानून बन जाता है। वह किसी आदमी को हिंसा नहीं करता। न ही वह झूठा अभियुक्त है। साइंटिस्ट बुद्धिमानी से अपने पाठ्यक्रम को आकार देते हैं, और ईश्वरीय मन की अग्रणी का अनुसरण करने में ईमानदार और सुसंगत हैं। उसे जीवित रहने के साथ-साथ उपचार और शिक्षा के माध्यम से साबित करना होगा कि मसीह का मार्ग एकमात्र ऐसा है जिसके द्वारा नश्वर लोगों को पाप और बीमारी से बचाया जाता है।

16. 371 : 26-32

विज्ञान और ईसाई धर्म के माध्यम से मानव जाति में सुधार होगा। दौड़ को बढ़ाने के लिए आवश्यकता इस तथ्य के लिए पिता है कि माइंड यह कर सकता है; क्योंकि मन अशुद्धता के बजाय पवित्रता प्रदान कर सकता है, कमजोरी के बजाय ताकत और बीमारी के बजाय स्वास्थ्य। सत्य संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तनकारी है, और इसके “हर तिनका को पूरा” कर सकते हैं।

17. 324 : 4-5

भाव और आत्म की शुद्धि ही प्रगति का प्रमाण है।

18. 323 : 6-12

प्रेम के उत्तम उदाहरणों के माध्यम से, हमें धार्मिकता, शांति और पवित्रता की ओर अग्रसर होने में मदद मिलती है, जो विज्ञान के स्थल हैं। सत्य के अनंत कार्यों को निहारते हुए, हम विराम देते हैं, - भगवान की प्रतीक्षा करें। तब हम आगे की ओर धकेलते हैं, जब तक कि असीम विचार चलता नहीं है, और गर्भाधान से अपरिभाषित दैवीय महिमा तक पहुंचने के लिए पंख लगा हुआ है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6